

श्री पञ्चस्तवी

श्लोक तथा कश्मीरी भाषा में अर्थ



रचतक

पं० जीयालाल धर (सराफ), भटयार,
श्रीनगर काश्मीर

प्रकाशकः

महाराज कृष्ण धर-राज्ञा प्रसाद कोल

मूल्य—।।।)
Price 75 nP.

...r Mercantile Press, Srinagar.

प्रार्थना

माज्य भवान्य छम म्य बूड चियानि आश
म्यति भोजतम च जारी
छुस अथर प्योमुत तुलुम थुद
कासतम म्य लाचारी ॥ १ ॥
पाद्य सेवन करः उन्य भ च्योन
लगै पादन च्य पारी
ध्यान दारः चोन हृदयस मञ्ज
जन मिहित च तिलकधारी ॥ २ ॥
उन्य भ गिवः च्यनि कशिरिस मञ्ज
गुण त लछिण सारी
पादनुय च्यानिन भ लागै लोल पोश चारि चारी ॥ ३ ॥
च्यानि दर्शन भापत म्य गोम इचकाल प्रारि प्रारी
हावतम म्य मुख कासतम म्य जन्म
जनमन हूञ्ज खारी ॥ ४ ॥
कुर म्य पञ्चस्तवी तरजमः कशिरिस मञ्ज जारी
युथ उपकार वाति भक्तिन
म्यति भनि च्यनि थारी ॥ ५ ॥

ॐ नमः त्रिपुर सुन्दर्यै ।

—:लघुस्तवः:—

ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधती मध्ये ललाटं प्रभां
शौक्लीं कान्ति मनुष्ण गोरिव शिरस्यातन्वती सर्वतः ।
एषासौ त्रिपुरा हृदि द्युति रिवोष्णांशोः सदाहः स्थिता
छिन्द्यान्नः सहसा पदै स्त्रिभि रघं ज्योतिर्मयी वाङ्मयी ॥ १ ॥

اندرازہ سنزی کمان ہش دِفت ہنز للاٹس زارانی
چندرمس ہش سفید ورن دقتہ تھیرس پٹھ لیس چمکانی
ہر دیس ہمیس سر پہ سندی پاٹھی چمکونی دِفتی روزانی
سُوی ترپورسندری سانس ہر دیس ہنز روزتن
سوی جوتی سروپ سرسوتی سروپ بنتھ اسی ٹھیکتن
ترن پدان ہندی انوگرہ کن۔ تمی ودھ پاپ سانی ژٹتن

या मात्रा त्रपुसीलता तनुलसत्तन्तूत्थितिस्पर्धिनी
वाग्बीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां मन्महे ते वयम् ।
शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजनन व्यापार बद्धोद्यमा
ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पृशन्ति जननी गर्भेऽर्भकत्वं नराः ॥ २ ॥

پوسہ زاوجہ تریٹی لنجی ہنزی تاری ہش یتھ چھُ پھیلاو
سارہ تری دار زاوِج ہِنز اسہ کُنڈلنی شکتی چھُو ناو
ہیزہ اکہ رس ہنز کلا یُوسہ ٹھیکت چھی آسانی
سُوی کلا جگت پیدہ کرنس پیٹھ آسونی اُودیوگی
امِہ کوی دھیان لیس ہنش زانی کرسنا کری سیر تش
گربہ بہاوس شری بہاوس ادہ کربنی بیہ ہنش

दृष्ट्वा संभ्रमकारि वस्तु सहसा ऐ ऐ इति व्याहृतं
येनाकूत वशादपीह वरदे बिन्दुं विनाप्यक्षरम् ।

तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा जाते तवानुग्रहे
वाच: सूक्ति सुधारसद्रव मुचो निर्यान्ति वक्राम्बुजात् ॥३॥

ہی دیوی ییدکانہہ خوفناک چیز وچھت جلد جلد   کری ائیہ ائیہ بندہ روتی سیدی مطلب تس تی حل
یئی مجرا تس تی منتر بنی تس چون انوگرہ   نیری وانی تسندی مُوکھ نشہ چھٹہ امرتہ کوی سُو سرِ

यन्नित्ये तव कामराजमपरं मंत्राक्षरं निष्कलं
तत्सारस्वत मित्यवैति विरल: कश्चिद्बुधश्चेद्भुवि।
आख्यानं प्रति पर्व सत्य तपसो यत्कीर्तयन्तो द्विजा:
प्रारम्भे प्रणवास्पद प्रणयितां नीत्वोच्चरान्ति स्फुटम् ॥४॥

ہی نتی رُوپی دویم منتر چون کامراجہ ناوہ آسون   سوی منتر نشکل نبتہ کانہہ برتھوی پٹھ چھُو زانہ وُن
سُوی گوسار سوتر یکج اکھر سنت تپ ہی ریشی چھی پران   اتم پروَن پٹھ برہمن اُمیوک ویاکھیان چھی کران
وانہ ناوت اُدیجہ جاے پٹھ یئی منتر اوشچارن کران

यत्सद्यो वचसा प्रवृत्ति करणे दृष्ट प्रभावं बुधै:
तार्तीयीक महं नमामि मनसा त्वद्बीज मिन्दु प्रभम्।
अस्त्वौर्वोऽपि सरस्वती मनुगतो जाड्याम्बु विच्छित्तये
गो: शब्दो गिरि वर्तते स नियतं योगं विना सिद्धिद: ॥५॥

تریمی بیجہ اکھر وک مہاوانی کھلنس پٹھ گاٹِل وچھان   تتھ اکھرس چندرہ دفتی سستس چھس بہ من کن پرنام کران
سروپ نبتہ سو یوگ دارنائے روتی بدھی دیوان   مورکھ رُوپی پاپس گالنہ باپت وارُو نائی اگن بنان

एकैकं तव देवि बीजमनघं सव्यञ्जना ऽव्यञ्जनं
कूटस्थं यदिवा पृथक् क्रमगतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काम मपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं
जप्तं वा सफलीं करोति सहसा तं तं समस्तं नृणाम् ॥६॥

ہی دیوی تس پری چون بیجہ اکھر بُدہ کُونئی   دو شہ روس یا دو شہ مُشتس اکہ سیوٗدٕ یا بیون بیونی
یمی یمی کامنائے باپت یس منترش آسی جپان   تمس منترشس بوہ سرس منتر سادی مطلب چھی نیران

वामे पुस्तक धारिणीमभयदां साक्षिस्रजं दक्षिणे
भक्तेभ्यो वरदान पेशल करां कर्पूर कुन्दोज्ज्वलाम् ।
उज्जृम्भाम्बुज पत्र कान्त नयन स्निग्ध प्रभालोकिनीं
ये त्वामम्ब न शीलयन्ति मनसा तेषां कवित्वं कुतः ॥७॥

کھو ورس اتھس منز چھ پوستک دراٹُت ہی بھوانی   چھنس اتھس جپ مال بیٖہ سیت ابھئے دیوانی
بیا کھ اتھ چون ہموش زان بھکتن ورِ دیوانی   پھولتھ پمپوشہ نتر دُزان ژہ بھکتن وچھانی
یُس یئی دھیان کری چون امبا من تس پرسن بنانی   آسہ کانہہ سو بیتھ جگتس منز تس چھی دانا ونانی

ये त्वां पाण्डुर-पुण्डरीक पटल स्पष्टाभिराम प्रभाम्
सिञ्चन्तीममृत द्रवैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम् ।
अश्रान्तं विकटस्फुटाक्षर पदा निर्याति वक्त्राम्बुजा-
त्तेषां भारति! भारती सुरसरित्कल्लोल लोलोर्मिवत् ॥८॥

یُس سفید پمپوش ڈلہ پاٹھ خوش ژہ دفتی وچھانی   ورشن کران امرت کوئی چھٹ تھجئے ایوانی
یُس یئی دھیان کری بوہانڈس منز چھ تس نیرانی   بے روکس پاٹھ تسندی مکھ نشہ سرسوتی ہنز وانی

ये सिन्दूर पराग पुञ्ज पिहितां त्वत्तेजसा द्यामिमा-
मुर्वीं चापि विलीन यावक रस- प्रस्तार मग्नामिव ।
पश्यन्ति क्षणमप्यनन्य मनसा स्तेषामनङ्ग-ज्वर-
क्लान्तास्त्रस्त-कुरङ्ग-शावक दृशो वश्या भवन्ति स्फुटम् ॥९॥

چھانی تیزہ کن یُس اکھا وچھی سندری برہمی آکاش   پرتھوی لا چھی رنگہ فیٹج وچھی آسس منس باس
نر ڈلونی منز کھنہ ماتر سن یُس یئی دھیان دارانی   سارے سے شکھتی تریہ روپ بنتھ تمن چھی قابلوانی
تمہ رشکھتی ہمن کامدیو تیر سیت بند کرانی   تتھ پاٹھ بیتھ خُرمیت مرگہ بچہ کانہہ رٹانی

चञ्चत्काञ्चन कुण्डलाङ्गद धरा मा ऽबद्ध काञ्चीस्रजं
ये त्वां चेतसि तद्गते क्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितिम् ।
तेषां वेश्मसु विभ्रमाद् ऽहरहः स्फारी भवन्त्य श्चिरं
माद्यत्कुञ्जर कर्ण ताल तरलाः स्थैर्यं भजन्ते श्रियः ॥१०॥

چمکونہ سونہ مختہ کنواجی چھم بند ثرہ لاگانی — سونہ سنز تاگر یرزلہ ون چھک ثرہ کمرس گنڈانی
یُس یئی دھیان چون منز منس کری تھ یاتھ ٹُس لگانی — تس رعتزی شاہانہ شوکت گھرس ریتہ تامت لچھمی
سو لچھمی یوسہ مستی کنہ کی حرکتہ یاتھ چنچل آسانی — سارے سئے سمید ایہ تس پرشس قرار کرتھ چھی روزانی

आभैस्या शशिखण्ड मण्डित जटा जूटां नृमुण्ड स्रजं
बन्धूक प्रसवारुणाम्बर धरां प्रेतासनाध्यासिनीम् ।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयना मापीन तुङ्गस्तनीं
मध्ये निम्न वलित्रयाङ्कित तनुं त्वद्रूप संवित्तये ॥ ११॥

شوبھونی چانی جٹہ شوکٹہ نال منشہ کلہ مالہ سسُس — بندہ قرپوشہ رنگہ سرخ پوشاک تلہ مُردہ آسنہ آسُس
کمرس تاگر گنڈتھ چتر بھُج تری نتر دارانی — چون سروپ زاننہ باپتھ یئی دھیان بھکتی چھی کرانی

जातोऽप्यल्प परिच्छदे क्षितिभुजां सामान्य मात्रे कुले
निःशेषावनि चक्रवर्ति पदवीं लब्ध्वा प्रतापोन्नतः ।
यद् विद्याधर वृन्द वन्दितपदः श्रीवत्सराजोऽभवत्
देवि! त्वच्चरणाम्बुज प्रणतिजः सोऽयं प्रसादोदयः ॥१२॥

کاتہہ راجا معمولی کلس منز آسہ زامُت — کُل پرتھوی پیٹھ کران آسہ راج آسن پراوُمت
تس چکرورتس یاد دیوتا چھی پوزانی — چھو یہا تس چانی یاد پوزانے ہنز مہربانی

चण्डि! त्वच्चरणाम्बुजार्चनविधौ बिल्वीदलोल्लुण्ठन
त्रुट्यत्कण्टक कोटिभिः परिचयं येषां न जग्मुः कराः ।

ते दण्डांकुश चक्र चाप कुलिश श्रीवत्स मत्स्यांकितैः
जायन्ते पृथिवी भुजः कथमिवाम्बोज प्रभैः पाणिभिः॥ १३॥

ہی ژنڈی چانی ژرن پوزایہ بیٹھ لیس انانی بلہ پوش ژرٹ ژرٹ کنڈی سیت اتھ لیس چھی ژھنانی
ٹونگ تہ تیر کانی ہند نشانہ لیس کنڈی ختہ سیت سانی تتھ اتھ سُس پرُش بیہ زنہ راجہ مہاراج بنانی

विप्राः क्षोणिभुजो विशास्तदितरे क्षीराज्य मध्वासवैः
त्वां देवि! त्रिपुरे! परापरमयीं संतर्प्य पूजाविधौ।
यां यां प्रार्थयते मनः स्थिरधियां तेषां त एव ध्रुवं
तां तां सिद्धिमवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नी कृताः॥ १४॥

برہمن راجہ ویش یا شُدر چانی پوزا کرانی دودھ گیو یا چھ شراب پوزا کس کن ژہ ارپن کرانی
فرد ہایہ کُن یُی کینہ شرہانگن چھک ضرور تمن دیوانی بے روک پاٹھ وگنہ رستو یُی سِدھی سو پراوانی

शब्दानां जननी त्वमत्र भुवने वाग्वादिनीत्युच्यसे
त्वत्तः केशव वासव प्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति स्फुटम्।
लीयन्ते खलु यत्र कल्प विरमे ब्रह्मादयस्तेऽप्यमी
सा त्वं काचिदचिन्त्य रूप महिमा शक्तिः परा गीयसे॥ १५॥

ہی ماتا ترِبھونس منز شبد روپ ژہ آسانی جگتس منز ناد چونُوی سرسوتی چھی وَنانی
ژٔے نش کیشو اندراجہ دیوتا پرکٹ بنانی کلپس انتس برہما دک ژِیٔ نشہ لے گژھانی
کو ستا نیہ نہ سرنی مہماکس تہنز شکتی چھی وَنانی

देवानां त्रितयं त्रयी हुतभुजां शक्तित्रयं त्रिस्वरा-
स्त्रैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करमथो त्रिब्रह्मवर्णास्त्रयः।

यत्किञ्चिज्जगति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं
तत्सर्वं त्रिपुरेति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वतः ॥१६

دیوان منز ترِ لوُے دیوتہ اگنس منز تری اگن ژُئی   شکھتی منز تری شکھتی ژُئی یمرن منز ترِ لوی نمر ژُئی
ورنن منز تری ویدن ژئی گنگا جمنا سرسوتی ژُئی   لو لوہ سوہ گایتری ژُئی ست چت آنند ژُئی
یہ یُگن شراہ قاعدس منز ترگن سروپ   سو سو رُوپ پتہ پتہ یکان ژئی

लक्ष्मी राजकुले जया रणभुवि क्षेमङ्करी मध्वनि
क्रव्याद द्विप सर्प भाजि शबरीं कान्तार दुर्गे गिरौ।
भूत प्रेत पिशाच जम्बुक भये स्मृत्वा महा भैरवीं
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपद-स्तारां च तोय प्लवे ॥१७

رازہ گھرن منز ژہ لچھمی۔ جنگے ژہ منزرن بھومی   اُلٹہ وتی کلیانہ روپی خونخوار جانورن منز شکاری ژئی
کوہن پیٹھ چھک ژہ دُرگا پشاچن نشہ بھیروی   یم اُلٹہ جاین دھیان چون سرن تمن ژہ آپدا دور کرانی

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी
मातङ्गी विजया जया भगवती देवि शिवा शाम्भवी।
शक्तिः शंकरवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी
ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माता कुमारीत्यसि ॥१८

مایا ژئی کُنڈلنی ژئی کریا ژئی۔ مدھومتی ژئی   کالی ژئی۔ کلا ژئی۔ مالنی ماتنگی ژئی
وجیا ژئی۔ جیا ژئی۔ اختیارہ وا جیینہ ژئی   چت سروُپ ژئی سامرتھ ژئی شانبھوی شکتی ژئی
شنکرسنز ماٹھ چھک ژئی سرسوتی بھیروی ژئی   ہر یمہ شکلہ پہ اپر تر پرا۔ آتا ایم روپ ژئی

ऐं ह्रीं पल्लवितैः परस्परयुतैः द्वित्रि क्रमाद्यक्षरैः
काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिभिरथो क्षान्तैश्च तैस्तैः स्वरैः

नामानि त्रिपुरे! भवन्ति खलु यान्यत्यन्त गुह्यानि ते
तेभ्यो भैरवपत्नि विंशति सहस्रेभ्य: परेभ्यो नम: ॥१९॥

ऋ پٹھ سارنی اکھرن دوی ترِی کرِمہ ملناوت ک پٹھ ہ تانیہ شبدہ کُس رلاوت ناو چانی بناو
ہی ترِ پرائی دُہ۲ ساس ناو چانی رھسہ روپ بنانی ہی بھیر وِ پتنی تمن بہ رھسہ ناون پرنام کرانی

बोद्धव्या निपुणं बुधै: स्तुतिरियं कृत्वा मनस्तद्गतं
भारत्या त्रिपुरेत्यनन्य मनसा यत्राद्यवृत्ते स्फुटम् ।
एक द्वि त्रिपद क्रमेण कथित स्त्वत्पाद संख्याक्षरै:
मन्त्रोद्धार विधि विशेष सहित: सत्संप्रदायान्वित: ॥२०॥

جانِنی چھوی گاٹلن یِئی نو چِئی کُن من لگاوت
چانن پادن ہندی شمار کیو اکھرو کُن ملناوت
گوڈنیکہ دوِیمی ترِیمی پد کرِمہ منتر وو ہار وِدھ بناوت
رِتی سمپردائے کُس یِئی تواوُن مہ ژئی کُن من ٹھیکراوت

सावद्यं निरवद्यमस्तु यदि वा किं वानया चिन्तया
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति नरो यस्यास्ति भक्तिस्त्वयि ।
संचिन्त्यापि लघुत्वमात्मनि दृढं संजायमानं हठात्
त्वद्भक्त्या मुखरी कृतेन रचितं यस्मान्मयापि ध्रुवम् ॥२१॥

ہندائی سُس باہندائی رُس زِکرا اچھ تراوتھ
یس یِئی تو ترکانہہ ممنش پری آسِس بھکتی چانی
پننس پانس لوٗ بہ زانت رتی دِرِ ڑھتا پرادم
چانی بھکتی ہندی زورہ بکو اسی ہنتھ یِئی توتا بنادم

चर्चास्तवः

—: ॐ नमः त्रिपुरसुन्दर्यै :—

आनन्द सुन्दर पुरन्दर मुक्त माल्यं
मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य ।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु-
मञ्जीर शिञ्जित मनोहर मम्बिकायाः ॥ १॥

پادچانی سُندر آنند دایک اندراجن ترا وِیتھ مُکتہ مال
یمہ سیدت زبر دیچھت مہشاسُرسی کھنہ پاترس منزوٗوت سوپاتال
شُوٗئی رُونیہ پاد یوٗن روزتن مہ ہر دِیس
یُتھ بہ امبکائی بوزہ شرونیہ شرونیہ تال
سوی منوہر پاد بنتن مہ ہیتوب جے کارک مہ ہاوتن کمال

सौन्दर्य विभ्रमभुवो भुवनाधिपत्य-
संपत्ति कल्प-तरव स्त्रिपुरे ! जयन्ति ।
एते कवित्व कुमुद प्रकराव बोध-
पूर्णेन्दव स्त्वयि जगज्जननि ! प्रणामाः ॥ २॥

یم پرنام سُندر ییکہ دِلاسک جائے بنتھ تہندی شمار کرنہ ایوان
ترن بوٗنن ہندی راج سمپدا یہ ہندی کلپہ ورکھ ہی یم پرنام چھی بنان
یم پرنام کوِتائی رُوپی کمُدہ پوشہ پھولراونہ باپت چندرمہ چھی بنان
ہی جگت زننی وتنے تُرہ میانی یتھ ہی پرنام چھس بڑی کُن کران

देवि ! स्तुति व्यतिकरे कृत बुद्धयस्ते
वाचस्पति प्रभृतयोऽपि जडी भवन्ति ।
तस्मा न्निसर्ग जडिमा कतमोऽहमत्र
स्तोत्रं तव त्रिपुर तापन पत्नि ! कर्तुम् ॥ ३॥

چانی توتا کرنس پٹھ چھُونہ سامرتھ برہسپت نہ دیوتا جڈ بنانی !
ہی ترن تاپن گالوینہ چھُس موُرکھ بہ آستھ کتہ سامرتھ بہ کرہ توتا چانی

मातः! तथापि भवती भवतीव्रताप
निच्छित्तये स्तुति महार्णव कर्णधारः।
स्तोतुं भवानि! स भवच्चरणारविन्द-
भक्तिग्रहः किमपि मां मुखरी करोति ॥४॥

ہی مانا زانِت یِی سمارہ کٹھن دُوکھ چٹنہ بابت کرِوم توتا یِی چانی
یِہنے توتا یتھ سمسار ساگرس ہنی میسانی ناو بیہ ہانج میانی
چانی یاد کملہ کے لوچہ آوشہ بکواسی ہیہو چھُس توتا کرانی

सूते जगन्ति भवती भवती बिभर्ति
जागर्ति तत्क्षयकृते भवती भवानि।
मोहं भिनत्ति भवती भवती रुणद्धि
लीलायितं जयति चित्रमिदं भवत्याः ॥५॥

برہما روپہ جگتس کران پیدہ ژی وِشنو رُوپہ پالن کران ژیٔ
رودرہ روپہ سمہار آخرس کران ژی موہ دیوان تہ بیہ تھ تی گالان ژیٔ
لیلائے یمہ چانی چھوس وچھان رنگہ رنگہ ججے کار آسنئے چانن لیلاینیٔ

यस्मिन्मनागपि नवाम्बुजपत्र गौरि!
गौरि! प्रसादमधुरां दृशमादधासि।
तस्मिन्निरन्तर मनङ्ग शराव कीर्णाः -

सीमन्तिनी नयन सन्ततय: पतन्ति ॥६॥

ہی گوری ہمیوشہ رنگہ صفایس امرتہ نظر چھک ژہ تراوانی
تس پیٹھ نتی نیم سارئی یوگنئ کامدیوس زن چھ وش گژھانی

पृथ्वीभुजोऽप्युदयन प्रवरस्य तस्य
विद्याधर प्रणति चुम्बित पादपीठ: ।
यच्चक्रवर्ति पदवी प्रणय: स एष
त्वत्पाद पङ्कज रज: कणज: प्रसाद: ॥७॥

اودین راجس کھراوی پیٹھ کران میٹھ ودیادر تہ دیوتس چھی آدین
چکرورتی عہدہ اوس تہ پراومت چانی پاد گردی ہندی انوگرہ کن

त्वत्पाद पङ्कज रज: प्रणिपात पूतै:
पुण्यै रनल्प मतिभि: कृतिभि: कवीन्द्रै: ।
क्षीर क्षपाकर दुकूल हिमाव दाता
कैरप्यवापि भुवन त्रितयेऽपि कीर्ति: ॥८॥

ہی دیوی چانہ ہمیوشہ پادن ہنزی گردی پیٹھ کرِ ہیو پرنام
تم بڑئے نرمل اوتم تیز بوز بس دانا اوتم کوی پراوتمو نام
دودھ چندرمہ ریشم وستر بیہ شینہ پاٹھ صفا بنتھ تران بونن منز بڑئے نیکنام

कल्पद्रुम प्रसव कल्पित चित्रपूजा -
मुद्दीपित प्रियतमा मद रक्त गीतिम् ।

नित्यं भवानि ! भवतीमुपवीणयन्ति
विद्याधराः कनकशैल गुहागृहेषु ॥ ९ ॥

کلپیہ ورکھ پوشو سیت چانی پوُجا   لولہ سیت چھ گیوان چانی گیت
نت سمیرکے گُفا نہ وِپی گھرن منز   وایان ودیادھر سوز تہ ساز کیت

लक्ष्मीवशीकरण कर्मणि कामिनीना -
माकर्षण व्यतिकरेषु च सिद्धमन्त्रः ।
नीरन्ध्र मोह तिमिर च्छिद्दुर प्रदीपो
देवि ! त्वदंघ्रि जनितो जयति प्रसादः ॥ १० ॥

چانی چرنہ کملہ سیوائے ہُند پرساد   وش کران لچھمی تہ بیہ سدھین
شکھتی سو پراوان موہ روپی گیبنہ   انیہ گٹہ گالان ژانگی سیت زن

देवि ! त्वदंघ्रि नखरत्न भुवो मयूखाः
प्रत्यग्र मौक्तिक रुचो मुदमुद्वहन्ति ।
सेवानति व्यतिकरे सुर सुन्दरीणा -
सीमन्त सीम्नि कुसुम स्तव कायितं यैः ॥ ११ ॥

باج بوانی چانی ژرنن ہند نمہ رتن   تختہ دفتی واران زن کران
لوگنئی یلہ پرن پیوان ژہ ژرنن پیٹھ   نمہ چمکہ پرزلان مس تہ سُمہ ممن

मूर्ध्नि स्फुरत्तुहिन दीधिति-दीप्ति दीप्तं
मध्ये ललाटमुमारायुध रश्मि चित्रम् ।

हृच्चक्र चुम्बि हुतभुक् कणिकानुरूपं
ज्योति र्यदेत दिद मम्ब! तव स्वरूपम् ॥ १२ ॥

ماتا تژه مستک چندر زن پرزلوُن   رام رام بدرنیه دونی چمکوُن
ہردیس منز اگنی جیوتی سروپ زن   ماج چون سروپ چھوی پرکاش آسوُن

सिन्दूर पांसु पटल च्छुरिता मिव द्यां
त्वत्तेजसा जतुरस स्नपिता मिवोर्वीम् ।
यः पश्यति क्षणमपि त्रिपुरे विहाय
व्रीडां मृडानि सुदृशा स्तमनु द्रवन्ति ॥ १३ ॥

سندری گردی سُستی جرمُت آکاش   لاچھ رنگہ پرتھوی شران کرتھ زن
یُس وچھی کھنہ ماترس لاجِ تراوِت   تس سدھی ماجِ بوانی پتہ دوَرن

मातः! मुहूर्त मपि यः स्मरति स्वरूपं
लाक्षारस प्रसर तन्तु निभं भवत्याः ।
ध्यायन्त्यनन्य मनसा स्तमनङ्ग तप्ताः
प्रद्युम्न सीम्नि सुभगत्व गुणं तरुण्यः ॥ १४ ॥

ہی ماتا یُس مہورتس دھیان کری   چون سروپ لاچھی رنگہ تارِ سمان
سُندر جوان ایچھ رچھ نہ ڈلوفی ننہ سبسہ   کامنائی تادِ مچہ تس یچھی سُمران

आधार मारुत निरोध वशेन येषां
सिन्दूर रञ्जित सरोज गुणानुकारि ।
दीप्तं हृदि स्फुरति देवि! वपु स्त्वदीयं

ध्यायन्ति तानिह समीहित सिद्ध साध्या: ॥ १५॥

مولادارک پران بند کرتھ یمن — سندری بیت رنگمت یموپشس زن
ہردیس منز اتھ یموشس پٹھ — چون سروپ باسان رات کھو دن
تمنی پرشن ہندچھی دھیان داران — سدھ سادھ دیوتا تہ بیہ ست جن

ये चिन्तयन्त्यरुण मण्डल मध्यवर्ति
रूपं तवाम्ब! नव यावक पङ्क पिङ्गम् ।
तेषां सदैव कुसुमायुध बाण भिन्न -
वक्ष: स्थला मृगदृशो वशगा भवन्ति ॥ १६॥

سریہ منڈلکہ پرکاشہ وزلی رنگہ سُس بیہ — لاچھی رنگہ سُس یم چون دھیان داران
کامدیو سندی تیرہ چچہ وچھ سیسہ — اچھ رچھ تمن ماتحت چھی روزان

रूपं तव स्फुरित चन्द्र मरीचि गौर -
मालोकते मनसि वाग्धिदैवतं य: ।
निस्सीम सूक्ति रचनामृत निर्भरस्य
तस्य प्रसाद मधुरा: प्रसरन्ति वाच: ॥ १७॥

یم پرش منس منز چندرمہ پاٹھ چمکون — سرسوتی روپہ چون دھیان دارن
حدروس وانی مدر امرت بھر تھئی — نیری تمن نرمل پرواہ ہیو زن

शर्वाणि! सर्व जन वन्दित - पादपद्मे!
पद्म च्छद च्छवि विडम्बित नेत्र-लक्ष्मि!

निष्पाय मूर्ति जन मानस राजहंसि !
हंसि त्वमापदमऽनेकविधां जनस्य ॥ १८

ی پاپ گالونی ژئ پاد کملن   ساری جیو چھی پر نام کرانی
بہ شہ برگہ کے دفتی ہند پاٹھ   چانی نتر کمل چھی شوبھانی
ندھ ہنشس چھک چت ساگرس منز   راجہ ہنس ۂش زن ژہ روزانی
ی چھک سادھکس نانا پرکارِک   دوکھ تہ وادِ آپدا دور کرانی

इच्छानुरूप मऽनुरूप गुण - प्रकर्ष
सङ्कर्षिणि ! त्वमनुसृत्य यदा बिभार्षि ।
जायेत स त्रिभुवनैक गुरु- स्तदानीं
देवः शिवोपि भुवन त्रय सूत्रधारः ॥ १९

شنکر شتی پتے ژھلئے   یلی چھک ترگن سروپ پانہ داران
ہی دلوی ترن لوکن ہند   کیول گورو شیو ناتھ چھو اُپدان
سوی شمبھو ترن بھوونن ہند   خود پاٹھ سوتر دارہ بتان

योयं चकास्ति गगनार्णव रत्नमिन्दु -
र्योयं सुरासुरगुरुः पुरुषः पुराणः ।
यद्वाम मर्धमिद मन्धक - सूदनस्य -
देवि ! त्वमेव तदिति प्रतिपादयन्ति ॥

شہ شدرس منز رتنن لو   شوبھا ژندرمس چھئے انانی
ن تہ اسرن ہُنز گور چھہ آسونیہ   بھگوانس شکتی دیوانی
مہادیو سنز چھہ اردانگی سوی   چھک ژی یئی چھو ماج سدھ بنانی

ध्यातासि हैमवति येन हिमांशुरश्मि -
मालाऽमलद्युति-रकल्मष मानसेन ।
तस्याऽविलम्बमऽनवद्यमनल्प कल्प -
मऽल्पैर्दिनैः सृजासि सुन्दरि! वाग्विलासम् ॥ २१॥

یُس سُری چون دھیان نرمل کرِنو سُس   چندرمس سمان اندرہ شدھ منہ کن
ہی سندری تس ژہ جھٹپٹ کران پیدہ   سرسوتی ہُند وِکاس انوگرہ کن

त्वां व्यापिनीति सुमना इति कुण्डलीति
त्वां कामिनीति कमलेति कलावतीति ।
त्वां मालिनीति ललिते त्यऽपराजितेति
देवि! स्तुवन्ति बिजयेति जयेत्युमेति ॥ २२॥

سارسیٔ وانِت ژہ کامنا دایک   لچھمی۔ کلا۔ بیہ مالا روپ
دشمنس پیٹھ جئے سُس ژِئی للتا   چھی وَنان ژِی جیا ژِی اوما روپ

उद्दाम काम परमार्थ सरोज षण्ड-
चण्ड द्युति द्युतिमुपासित षट् प्रकाराम् ।
मोह द्विपेन्द्र कदनोद्यत बोध सिंह-
लीलागुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि ॥ २३॥

یُوسہ کامراجہ بیجاکھر پمپوش ڈلہ کے   پھولنہ باپت سریہ روپ روزانی
مولادار پیٹھ شٹھ چکرس منز   اوپاسی رُوپ یُوسہ تنتی آسانی
یوسہ موہ ہستس گالنہ باپت   گیانہ روپ سِہہ گُفی چھی روزانی
تمسی بھگوتی ماتا ترِپرائی   گُل گنڈتھ تس چھُس پرنام کرانی

गणेश वटुक स्तुता रतिसहाय कामान्विता
स्मरारिवर विष्टरा कुसुमबाण बाणै र्युता ।
अनङ्ग कुसुमादिभि; परिवृता च सिद्धै स्त्रिभि:
कदम्बवन मध्यगा त्रिपुरसुन्दरी पातु न: ॥२४

گنیش تہ بھیرون چھِیے توتا ژہ کرِرچ
شونا تھ پانہ چھُوی آسن چوٗنئی
انگہ کوسمو بیہ ترِسیو سدھو چہ وٗنچ
سوی رُوپ چون ماج ہی ترِپور سُندری

رتی سان کام دیو چہ سیوا کرُون
کام دیو پوشہ بانن سوارُون
کدمبہ جنگلس منز چہ روزانی
کلیان مہ کرتم تہ راچھ میانی

त्वामैन्दवीमिव कला मनु भाल देश -
मुद्भासिताम्बर तला म ऽ वलोकयन्त: ।
सद्यो भवानि! सुधिय; कवयो भवन्ति
त्वां भावनाहित धियां कुल कामधेनु: ॥ २५॥

یم ستنکس منز ژہ چندرمہ کلاہس
ہی دیوی جلدی چھئی تم بنان دانا
چھکس تمن دیوان چئی سارنی مطلبن

وچھی چمکا دمتی آکاشہ سُس
بیہ بڈی کوتائی رسس
چانی بادنا کن تم نرمل بوزشس

उत्तप्त हेम रुचिरे त्रिपुरे! पुनीहि
चेत श्चिरन्तन म, घौघ वनं लुनीहि ।
कारागृहे निगड़ बन्धन पीड़ितस्य
त्वत्संस्मृतौ झड़िति मे निगड़ा स्त्रुटयन्ति ॥ २६

تا دست سوان زن ژہ چمکان ترپرائی
شدھ کرمن مہ پاپہ کھلہ میانی لون

سمسار روپی جیلس منتر چھوس بہ   کامنائی بیٹرین ہئند چھوم مہ بور
چانی سمرنی کن جلد جلد چھنن مہ بیڑی   یلہ آسی عارتس مہ انوگرہ یچون

रुद्राणि! विद्रुम मयीं प्रतिमा मिव त्वां
ये चिन्तयन्त्यरुणकान्ति मनन्य रूपाम्।
तानेत्य पक्ष्मल दृशः प्रसभं भजन्ते
कण्ठावसक्त मृदु बाहु लता स्तरुण्यः ॥२७॥

ہی رودرانی یُس چانس سُروپس دِچھی   رود رشکلہ سرِ پرسندی پاٹھ چمکان
اپور و روپس یتھسئی دھیان کری   سُندر نظر وسِیہ اچھ رچھ جوان
زورہ سیت نمہ گردنی یٹھ اتھ تراوی ترادی   اند اندی روز تھ تس سیوا کران

त्वद्रूप मुल्लसित दाडिम पुष्परक्त -
मुद्भावयेन्मदन दैवत मक्षरं यः।
तं रूपहीनमपि मन्मथ निर्विशेष -
मालोकयन्त्युरु नितम्ब भरा स्तरुण्यः ॥२८॥

یُس چون دھیان کری دین پوشہ زنگہ کُس   اوناشہ کامراج بیجہ اکھرس
یُدوُی روپ کن آسی سوی بد شکل   اچھ رچھ وچھن زن کامدیوتس

त्वद्रूपैक निरूपण प्रणयिता बन्धो दृशो स्त्वद्गुण -
ग्रामाकर्णन रागिता श्रवणयो स्त्वत्संस्मृति श्चेतसि।
त्वत्पादार्चन चातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं वाचि मे
कुत्रापि त्वदुपासन व्यसनिता मे देवि मा शाम्यतु ॥२

ہی دیوی چانہ درشنک ابلاشہ   ہر دمہ نتر نی منز مہ روزتن

چانی گُن بوزنک تمنا مہ آستن | ہر دمہ روزتن میانن کنن
چون نامہ سمرن ژلس ہنز گری گری | چانی یاد پوجا میانن اکھن
چون کیرتن کردنی روزتن مہ وانی | او پاسنا چانی کم منتہ مِہ گزھتن

ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरि चन्द्र सहस्र रश्मि -
स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दितायै ।
वागीश्वरि! त्रिभुवनेश्वरि! विश्वमात -
र्न्त बेहि श्च कृत संस्थितये नमस्ते ॥ ३०॥

سرسوتی ترپور سندری جگت ماتا | بھونی شوری چھک آسوینہ ژِئی
برہما رودر اندر سریہ چندرمہ کمار | وشنو گنیش چھوی پوجان ژِئی
اندرہ نبرہ وانت ژہ تربھونس سارسئی | گل گنڈت میون پرنام واتی نے ژئی

यः स्तोत्र मेतदनु वासर मीश्वरायाः
श्रेयस्करं पठति वा यदि वा शृणोति ।
तस्येप्सितं फलति राजभि रीडयते, सो
जायेत स प्रियतमो हरिणेक्षणानाम् ॥ ३१ ॥

یس ئی چون تو تریری پرتھ دوہ مہ سا پولن | یا کنو بوزی اَدہ بنیہ تس کلیان
چکرورت راجہ تس کرن پوجا | ساری مطلب تس چھی نیران
ہنیچ کامنا سدھ تس چھی سیدان | سُوی چھُو لوگنین ہند زیادہ ٹوٹھ بان

अथ घटस्तव: ॥

ॐ नमो महामायायै

देवि! त्र्यम्बक पत्नि पार्वति सति त्रैलोक्य मातः शिवे!
शर्वाणि त्रिपुरे मृडानि वरदे रुद्राणि कात्यायनि!
भीमे भैरवि चण्डि शर्वरि कले कालक्षये शूलिनि!
त्वत्पाद प्रणतानुनन्य मनसः पर्याकुला न्पाहि नः ॥१॥

ہی دیوی چھک ژہ ترمبکہ پتنی   ژی وناں ستی ژی پاروتی
تریلوکی ہنز ماتا بھگوتی   ژی ور دیوان ژی چھک مرڈانی
ژی ترپور سندری ژی رود رانی   ژی بھیانک روپ ژی شروری
ژی چنڈی ژی ترشول دارانی   ژی کلی کالس ناش کرانی
آئے شرن ژہ پادن وننے کن چھی نمتھی   رٹ باکلتاسے منز اسہ رچھ ژی

उन्मत्ता इव सग्रहा इव विषव्यासक्त मूर्च्छा इव ।
प्राप्त प्रौढ़मदा इवार्ति विरहग्रस्ता इवार्त्ता इव ।
ये ध्यायन्ति हि शैलराज तनयां धन्यास्त एकाग्रत-
स्त्यक्तोपाधि विवृद्ध राग मनसो ध्यायन्ति वामभ्रुव: ॥२॥

پھراہ تیہ براہ ییس زہر کن ہو رچھت نشہ رس   ورٹن چیمٹ چانی عار چرہ یس
ہی ہمالہ پتری یم کرن چون دھیان   تم آسونی چھی ستھاہ بھاگوان
اچھ رچھ ایکاگرہ بنتھ اوپادھی رچھ   راگہ ستہ نسندوی دھیان چھی داران

देवि! त्वां सकृदेव यः प्रणमति क्षोणीभृतस्तं नम-
न्त्याजन्मस्फुरदङ्घ्रि पीठविलुठत्कोटीरकोटिच्छटाः।
यस्त्वामर्चति सोऽर्च्यते सुरगणैः यः स्तौति स स्तूयते
यस्त्वां ध्यायति तं स्मरार्ति विधुरा ध्यायन्ति सिद्धाङ्गनाः ॥३॥

یُس پرٚش اکہ لٹہ کری زہ کُن پرنام   تسنزی کھرادی بیٹھ رازہ ہوکٹہ ڈلوان
یُس پرٚش لولہ کن کری چانی پوٗجا   تس پرٚشس پوٗزآن دیوہ کھل
یُس پرٚش کران آسی چانی توٗتا   دلونا تسنزی استوتی کران
یُس پرٚش مَن کن کری چونی دھیان   سُر گچھ اچھ ریچھ تس چھی سمُران

ध्यायन्ति ये क्षणमपि त्रिपुरे! हृदि त्वां
लावण्ययौवनधनैरपि विप्रयुक्ताः।
ते विस्फुरन्ति ललितायतलोचनानां
चित्तैकभित्तिलिखितप्रतिमाः पुमांसः ॥४॥

ہی ترپور سندری یُس کری دھیان چون   منز منس اکسی کھنہ ماترس
یُدوے سوٗ آسہ شُندر تائی روٗش   بیہ جوانی روس بیہ نرِدھن
اشٹہ سِدھی تس منچے لبہ بیٹھ   شکلہ کھنن سوی دھیان سرون

एतं किं नु दृशा पिबाम्युत विशाम्यस्याङ्गमङ्गैर्निजैः
किं वाऽमुं निगलाम्यनेन सहसा किं वैकतामाश्रये।
तस्येत्थं विवशो विकल्पघटनाकृतेन योषिज्जनः
किं तद्यन्न करोति देवि! हृदये यस्य त्वमावर्तसे ॥५॥

اِتھس پوٗرشس کرہا پرولش نظری بیت   اپرہا استدن استھان

کیا سنا انگلتھ گژہ نا مس سیت کونی کن پانس سیت رٹھن
اچھ رچھ ستدر گری گری اتس کُن بے روک پاٹھ آدین سپدن
سنسارس منز کیا چھو درلبھ تس ہر دیس منز یس ژہ پانہ فیرن

विश्वव्यापिनि! यद्वदीश्वर इति स्थाणावनन्याश्रयः
शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननि! त्वय्येव तथ्यास्थितिः।
इत्थं सत्यपि शक्नुवन्ति यदिमाः क्षुद्रा रुजो बाधितुं
त्वद्भक्तानपि न क्षिणोषि च रुषा तद्देवि चित्रं महत्॥

ہی جگت دیایِنی یتھ شیو ناتھس ایشرہ ناو جگتس منز وناں
تتھے پاٹھ ماج بھوانی ژی جگتس منز شکھتی ہُند ناو چھوی ژہ شویان
یدوے ایشر بھکتن سمسارس منز کونی کونی دوکھ چھو دیوان
آسیتھ چھ ماج چون کرودھس پیٹھ تی چھکنہ پننن بھکتن دوکھ ژہ ہاوان

इन्दोर्मध्यगतां मृगाङ्कसदृशच्छायां मनोहारिणीं
पाण्डूत्फुल्लसरोरुहासनगतां स्निग्धप्रदीपच्छविम्।
वर्षन्तीममृतं भवानि! भवतीं ध्यायन्ति ये देहिन-
स्ते निर्मुक्तरुजो भवन्ति विपदः प्रोज्झन्ति तान्दूरतः

چندرمس منز شش صفا چندرمہ کہ کُسس پھولتس ہیو شُس پیٹھ ژُئی
خوش ایونہ پرکاشہ کہ کُسس ژہ آسوینہ لوسہ کران ورشن امرت کوی
یم ئی دھیان کرن تم بیماری روس روزان آپدا چھی تمنی دور سیدان

पूर्णेन्दोः शकलैरिवातिबहुलैः पीयूषपूरैरिव
क्षीराब्धेः लहरीभरैरिव सुधापङ्कस्य पिण्डैरिव।

प्रालेयै रवि निर्मित तव वपु ध्यायान्ति ये श्रद्धया
चितान्त र्निहितार्ति ताप विपद स्ते सपदं बिभ्रति ॥ ८॥

پونم چندرمہ زن امرت پراواہ زن   گچھ پنڈہ کھیرہ شدیچ لہر زن
شیٹس ہیوصفا چون سروپ بناوت   لیس گری دھیان تنہ منہ نوکہ کن
تس چھی دور گژھان دوکھ عار چرتہ آپدا   سمپداسو پراوان جنمہ جنمن

ये संस्मरन्ति तरलां सहसोल्लसन्तीं
त्वां ग्रंथि पञ्चक भिदं तरुणार्क शोणाम् ।
रागार्णवे बहुल रागिणि मज्जयन्तीं
कृत्स्नं जगद् दधति चेतसि तान्सृगा ह्यः ॥ ६॥

یس سادھک گری دھیان چون پاسون   جمل پرکاشہ شس تجلی سمان
پانژھ دل ژھی بالہ سربہ سندی پاٹھ   اوزلہ رنگہ شستی ژن ژہ چمکان
رنگ شدرس منز فولمت سارو ئی   جگت ژن رنگہ کن سرخی سان
یس ئی دھیان کری تس بوگنی چھس منز   تسندوی گری گری دھیان چھی دھاران

लाक्षारस स्नपित पङ्कज तन्तु तन्वी-
मन्तः स्मरत्यनु दिनं भवतीं भवानि ।
यस्तं स्मर प्रतिमम᳚ प्रतिम स्वरूपा
नेत्रोत्पलै मृगदृशो भृशम᳚ चेयन्ति ॥ १०॥

لاچھی سیت رنگمتہ پمپوشہ تارہیو   پرتھ دوہہ یس داری چونی دھیان
تس کامہ دیو زانت کمہ یوگنی   نتر ژویہ پوشو چھی پوجا کران

स्तुमस्त्वां वाच्यमुव्यक्तां हिम कुन्देन्दु रोचिषम्
कदम्ब मालां बिभ्राणा माऽऽ पाद तल लम्बिनीम् ॥ ११ ॥

تونا کران چھی اسی ژہ ہی واکھ دیوی — چندرس کوندہ پوشس ہش یوسہ چھی دِتمان
شوبھونی کدمبہ مالہ چھک ماجی ژہ واروفی — تال چھئے ژہ شیرہ پیٹھ پادن تان

मूर्ध्नीन्दोः सितपङ्कजासनगतां प्रालेयपांडु त्विषं
वर्षन्ती ममृतं सरोरुहभुवो वक्त्रेपि रन्ध्रेपि च।
अच्छिन्ना च मनोहरा च ललिता चाऽति प्रसन्नापि च
त्वामेव स्मरतां स्मरारिदयिते! वाक्सर्वतो वल्गति॥

کلس پیٹھ چندرمہ شوبون ژہ دراُمت — پمپوشس پیٹھ ژہ دفتی سبس
پتھ چھک ژہ شوبونی برہمہ بندرس تنز — امرت چھٹان بڈی شوبھائے سبس
یُس یِی دھیان کری چون ہی دیوی تس — سرسوتی نیرہ مکھ بڈی وکاسہ سبس

ददातीष्ठा भोगान् क्षपयति रिपून् हन्ति विपदो-
दहव्याधीन् व्याधीन् शमयति सुखानि प्रतनुते।
हठादन्तर् दुःखं दलयति पिनष्टीष्टु - विरहं
सकृद् ध्याता देवी किमिव निरवद्यं न कुरुते ॥१२

مطلب چھک دیوان دشمن ژہ گالان — آپدا بن چھک ژہ ناشس کران
آدین جالان ویادین شمراوان — سکھ تہ سمپدا چھک ژہ ویستاران
اندرم دوکھ تہ داد پریہ ورھ چہ گالان — یم اکی لٹی ماجی دھیان چون کران
تم ادہ کمہ نہ پایہ نشہ چھی موکلان

यस्त्वां ध्यायति वेत्ति विन्दति जपत्याऽलोकते चिन्त

त्यन्वेति प्रतिपद्यते कलयति स्तौत्युाश्रयत्युचैति ।
यश्च त्र्यम्बकवल्लभे तव गुणानाकर्णयत्यादरा -
त्तस्य श्रीर्न गृहादपैति विजयस्तस्याग्रतो धावति ॥१४॥

یُس چون کری سُمرن یُوز سیت یس زانی
دد یاۓ کن ماجی یُس ژہ پراوی

شُدھ منہ کن جپہ ناو چون گری گری
لولہ نتر وسیت کری درشُن

شرونہ کن منن کن یُس وِچاری
ہر وقتہ تو تائی کری چانی بیہ پوُجا

گُن گیوی چانی لولہ سان دن تہ رات
تمہ روستوی یُس نہ روزی اکھ ساعت

لچھمی چھینہ تسندی گھری نشہ نیران
یتئے تس پرتھ وقتہ برونٹھ چھو دوران

किं किं दुःखं दनुजदलिनि! क्षीयते न स्मृतायां
का का कीर्तिः कुलकमलिनि! ख्याप्यते न स्तुतायाम् ।
का का सिद्धिः सुरवरनुते! प्राप्यते नार्चितायां
कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमालम्बितायाम् ॥१५॥

کمتا دوکھ چھی تم ہی راکھسن گالونی
یم گلنی نہ چانۓ سمرنی سیت

کوسہ چھی نیکنامی ہی گلس کھارونی
یوسہ نہ بنی چانۓ تو تائے سیت

کوسہ کوسہ چھی سدھی ہی سدھی داتری
یوسہ نہ پراوت سپدی چانی پوجاۓ سیت

کم کم چھی تم لوگ ہی جگت امبا
یم نہ سدھ بنن چانی چنتن سیت

ये देवि! दुर्धरकृतान्तमुखान्तरस्थाः
ये कालि! कालघनपाशनितान्तबद्धाः ।
ये चण्डि! चण्डगुरुकल्मषसिन्धुमग्ना-
स्तान्पासि मोचयसि तारयसि स्मृतैव ॥१६॥

ہی دیوی یم مہا کالہ سندسی کٹھنس   موکھس منز باگ گیمت
ہی کالی یم مہا کالہ سنزی موجی   زری چہ پاٹھ چھی گنڈنہ آمرت
ہی چنڈی یم باریک تہ کٹھنس   پا بہ کس سمندرس منز چھ غٹمت
یلہ کرن دھیان چون تلہ چھک رچھان   تمن موکلاوان بیہ تاران ؛ چیئی

लक्ष्मी वशीकरण चूर्ण सहोदराणि
त्वत्पाद पङ्कज रजांसि चिरं जयन्ति।
यानि प्रणाम मिलितानि नृणां ललाटे
लुम्पन्ति दैव लिखितानि दुरक्षराणि ॥ १७॥

موج بوانی لچھمی وشس کرنس پٹھ   یاد چہ گرد چانی چھی طاقتہ سیس
چانی پرنامہ وزی لگہ یمن للاٹس   یاد چہ گرد چانی بڈی نشانہ سیس
سوی یاد چ گرد گالی دُراکھرتس   جگتس منز بنی سوئے کارسُس

रे मूढाः किमयं वृथैव तपसा कायः परि क्लिश्यते
यज्ञै र्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्तीक्रियन्ते गृहाः।
भक्तिश्चेद्विनाशिनी भगवती पादद्वयी सेव्यता-
मुन्निद्राम्बुरुहातपत्र सुभगा लक्ष्मी पुरो धावति ॥ १८

ہی موڑھ کیازی چھکت لے فائدہ تپ کن   پننس شریرس تکلیف دیوان
یگنہ کن دان کن بڑی دکھنا ی رکن   کیازہ چھک گرہ پنن خالی کران
گژھ شرن ماجہ شارکانی پراوچہ بھکتی   ہہ کرون تسندوی یاد سیون
ادہ پھولتہ ہمپوشہ نترو سیس   لچھمی چہ برونٹھ برونٹھ چھئی دورن

याचे न कंचन न कंचन वञ्चयामि
सेवे न कंचन निरस्तसमस्त दैन्य: ।
श्लक्ष्णं वसो मधुर मृद्विम भजे वरस्त्री
देवि! हृदि स्फुरति मे कुलकामधेनु: ॥१९॥

کانسی منگہ نہ ہیہ کینسی تارہ نہ بازی — عاجر تراوہ کرنہ کینسی سیوا
زاول وستر دارہ کھمہ مُودری چیز — اچھ رچھ نی سیت کرہ کھیلا
بلہ ماج یوانی ہردیس منز مہ روزک — تلہ میانی کامنا یہ سدھ سپدن

शब्दब्रह्ममयि ! स्वच्छे! देवि! त्रिपुर सुन्दरि! ।
यथाशक्ति जपं पूजां गृहाण परमेश्वरि! ॥२०

ہی شبد روپی نرمل سروپی — ہی دیوی ہی ترپور سُندری
کریتھا شکھتی مہ چانی پوجا — کر سُویکار ہی پرمیشوری

नन्दन्तु साधका: सर्वे विनश्यन्तु विदूषका:
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरु: सदा ॥२१

روزتن شُکھی ماج سادھک ساری — یم دوشٹھ آسن تم گلتن
بشوروپ اوستھا میتہ ماج بنتن — گورہ دیو سدا مہ پیٹھ پرسن روزتن

दर्शनात्पाप शमनी जपान्मृत्यु विनाशिनी ।
पूजिता दु:ख दौर्भाग्यहरा त्रिपुरसुन्दरी ॥२२॥

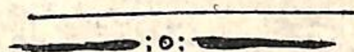
چانی درشنہ پاپ ساری چھی گلان — چانی جپہ مرتو چھو ناش سپدان
پُوجا یے کن چون مہما گیونہ کن — چھوس دوکھہ دُرباگیہ دور چھیس گژھان

नमामि यामिनीनाथ लेखालङ्कृत-कुन्तलाम् ।
भवानीं भवसन्ताप निर्वापण-सुधा-नदीम् ॥२३॥

نمسکار چھوس کران یس کیشس منزچھ چندرمہ پہ زلان راتہ و دن
سمسارہ دوکھن چھک نواران ژہ ئی امرت ندی ھندی پہ رواہ سیت زن

मंत्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्गतम् ।
त्वया तत्क्षम्यतां देवि! कृपया परमेश्वरि ॥२४॥

منتر ھین آست کریا ھین آست ودھی ھین آست ئی گنچاہ پہ دوم
تتھ سارسی ہی پرمیشوری ژہ ئی کرپاے کن عاریس مہ تاج بخشم



अथ अम्बास्तवः ॥

ॐ नमो जगदम्बिकायै ।

यामामनन्ति मुनयः प्रकृतिं पुराणीं
विद्येति यांश्रुतिरहस्यविदो वदन्ति ।
तामर्धपल्लवितशंकर-रूप - मुद्रां
देवीमनन्यशरणः शरणं प्रपद्ये ॥ १॥

یس مُنیشر آدِ پرکرتی مانان   یس وَنان ودیا وید رھسہ زانہ ونی
تس شیو ناتھ سنز ار دانگی یوُسَہ   شوبھائی سُتس جگتس چھ رچھونی
تس آمرُت بہ ایکاگرِ چت بنِت   چھوس پیوان تس پادن پیٹھ پرن

अम्ब! स्तवेषु तव तावदकर्तृकाणि -
कुण्ठी भवन्ति वचसामपि गुम्फनानि ।
डिम्भस्य मे स्तुतिरसावसमञ्जसापि -
वात्सल्य निघ्न हृदयां भवतीं धिनोति ॥२॥

ہی ماتا چانی تو تا کرنس پیٹھ   برہما واتی تی جڈھ بنانی
مہ شرُ سنزی تو تا بدِ چھی ٹوٹ پھوٹئی   باو تاگے کن ہر دیس ژہ تُسکھ دیوانی

व्योमेति बिन्दुरिति नाद इतीन्दुलेखा
रूपेति वाग्भवतनूरिति मातृकेति ।

निष्यन्दमान सुखबोध सुधा स्वरूपा
विद्योतसे मनसि भाग्यवतां जनानाम् ॥३॥

چداکاشہ روپ کِن نادبندروپہ کِن   چندرمہ کلاہش چھک ژہ پرزلان
وانی ہُند شبد روپ چون چھو آسُون   سُکھ تہ گیان امرت ژہ نشر نیران
چمکان چھک تس منز ملنس ژہ پلنئے   جگتس منز آسہ یوس بہاگوان

आविर्भवत्पुलक संततिभिः शरीरै-
र्निष्यन्दमान सलिलै र्नयनैश्च नित्यम् ।
वाग्भिश्च गद्गद-पदाभि रुपासते ये
पादौ तवाम्ब! भुवनेषु त एव धन्याः ॥४॥

آسن یس روم اوتھ دینہ شر برس   اوشہ آسس نترو نیران
وانی کِن پد پری گت گچھ رِچھ   یادن ژہ آسہ یُس پوجا کران
تس ہیو کوس سنا چھو تر یلوکی منز   ترن بونن منز سوی چھو بہاگوان

वक्त्रं यदुद्यतमभिष्टुतये भवत्या-
स्तुभ्यं नमो यदपि देवि! शिरः करोति ।
चेतश्च यत्त्वयि परायणमम्ब! तानि
कस्यापि कैरपि भवन्ति तपो विशेषैः ॥५॥

ملُھ یس آسی اود لوگہ سُتس   ہی ماج چانی توتا کرنس پیٹھ
شیر پسند وی آسہ گری گری ہی موج   ژۓ کُن نمسکار کرنس پیٹھ
من یس لگمت آسہ موج ژۓ کُن   سمرن گری چون راتر و دن
آسی کانہہ سُو بہاگوان کتانیہ خاص تپ کے   پُنیہ کن روزی گری گری چئی شرن

मूलालवाल कुहरादुदिता भवानि!
निर्भिद्य षट् सरसिजानि तडिल्लतेव।
भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दु-
निःष्यन्दमान परमाऽमृत तोय रूपा ॥ ६॥

مولادارٕ نشہ دراںچ تہر شہ ہمپوشس چھٹِتھ بجلی ہندی پاٹھی ھیُر کُن کھسان
سہسر ڈلسی منز اژرت تورہ نیران امرت وانی رُوپہ بُن چھی وا تان

दग्धं यदा मदनमेकमऽनेकधा ते
मुग्धः कटाक्ष विधिरङ्कुरयां चकार।
धत्ते तदा प्रभृति देवि! ललाट नेत्रं
सत्यं ह्रियेव मुकुलीकृत मिन्दुमौलिः ॥७॥

یلہ زُول کامدیوٕ اکھ شیوٕ ناتھن اَکہ گٹا کھِی تِتھ کیت اُویدا وِتھ
تتہ پیٹھ مہادیوٕ منز للاٹُک نِتر شرم کرِن اوٗڈوٗئی نتر چھُو مُوژرا وِتھ

अज्ञात संभव मनाकलितान्ववायं
भिक्षुं कपालिनमऽवास समद्वितीयम्।
पूर्वं करग्रहण मङ्गलतो भवत्याः
शम्भुं क एव बुबुधे गिरिराजकन्ये! ॥ ८॥

نہ جانمتی جنم سُس کولہ سُس بھکیوٗ ننگئے تہ دوئیمی روس ژھنت کلہ مال
چانی وٕواہ برونٹھ ہی ہمالہ پیتری کُس اوس زانان شیوٕ سُند حال

चर्माम्बरं च शवभस्म विलेपनं च
भिक्षाटनं च नटनं च परेत भूमौ ।
वैताल संहति-परिग्रहता च शम्भोः
शोभां बिभर्ति गिरिजे! तव साहचर्यात् ॥९॥

چرم پوشاک شمشان بھسا ملت   نژان شمشانن سُو بھیک منگہ وُن
پھُوتہ کھل پر دار آسُون تس شیوس   شوبان تلہ یلہ ژہ سیت چھُو پکوُن

कल्पोप संहरण केलिषु पण्डितानि
चण्डानि खण्ड परशोरपि ताण्डवानि ।
आलोकनेन तव कोमलितानि मातः!
लास्यात्मना परिणमन्ति जगद्विभूत्यै ॥ १०॥

کلپانتک ناش نچُونا تہ گنڈُو تا   تس مہادیو ستنز چھی بڈ کریڈا
ساروی سو بدلان سمپداین منز   یلہ تراوان تتھ ژہ شُوبھ نظرا

जन्तोरपश्चिमतनोः सति कर्मसाम्ये
निःशेष पाश पटल च्छिदुरा निमेषात् ।
कल्याणि! देशिक कटाक्ष समाश्रयेण
कारुण्यतो भवसि शाम्भव वेददीक्षा ॥ ११॥

جیوس کرمن سپد تتھ شدھی   اکہ نمیشہ پھانسی سموہ تس ژہ گالان
ژئ چھک دیای کِن گوُرہ روپ بنتھ   شُوشکتی دیکھیا اُپدیش ژئ کران

मुक्ता विभूषणवती नव विद्रुमाभा -

यच्चेतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या ।
एकः स एव भुवन त्रय सुन्दरीणां
कन्दर्पतां व्रजति पञ्चशरीं विनाऽपि ॥ १२

…ته ماله زیور رُودره ماله چهُن چهُن　　آسهٔ نیه چهک ژه موج شوبها یمان
…س پوٗرشس آسہِ سندهیا تارکوسُس　　چون سروپ یتهٕ هیونِت یاسان
…س پوٗرشس تری بهونچه یوگنئی　　پانچه کان زوس تی کا مدیو سُمران

ये भावयन्त्यमृतवाहिभि रंशुजालै-
राप्यायमान भुवनाममृतेश्वरी त्वाम् ।
ते लङ्घयन्ति ननु मातरलङ्घनीयां
ब्रह्मादिभिः सुर वरैरपि कालकक्षाम् ॥ १…

…ی ماتا یم ژه سُروٗی آسن　　امرتهٕ رویهٕ سُکهٕ دیوان ترن بهونین
…تران کاله مریا دبٕ ئے اپُور　　یتهٕ ترُن کهٕٹُن برہمادکن تہٕ دیون

यः स्फाटिकाक्ष गुण पुस्तक कुण्डिकाढ्यां
व्याख्या समुद्यत करां शरदिन्दु शुभ्राम् ।
पद्मासनां च हृदये भवती-मुपास्ते
मातः! स विश्व कवितार्किक चक्रवर्ती ॥ …

…تکچ جپ مال اکه اتهٕ دارتهٕ ژه　　پوٗستک کمنڈل بیه دون اتهٕن
…کهیالنس یتهٕ بباکهٕ اتهٕ چهٕ لگمِت　　چندرمس هیو پهوٗشن زن چهٕ آسن
…س یتهٕ دهیان کری چون موج منز منس　　کوین هند چکروَرت بنان سو جگتس

बर्हावतंसयुत बर्बर केशपाशां
गुञ्जावली कृतघनस्तन हार शोभाम् ।
श्यामां प्रवाल वदना सुकुमार हस्तां
त्वामेव नौमि शवरीं शवरस्य जायाम् ॥ २५॥

مورنیچہ مکٹہ سُٹس ژہ چمکونی کیشہ سُٹس　رژہ فلی ہارسُٹس ژہ شوبھائمان
چمکونی مکھہ سُٹس تہ کومل اتھو سُٹس ژہ　تتھ شکاربائی رویس بہ پرنام کران

अर्धेन किं नवलता ललितेन मुग्धे !
क्रीतं विभोः परुषधेमिदं त्वयेति ।
आलीजनस्य परिहास वचांसि मन्ये
मन्दस्मितेन तव देवि जड़ी भवन्ति ॥२६॥

ہی مہاسندری چھک ژئی آسونیہ　منوہر تہ سندر تہ تہر جن
کیا ژی ہتھن مولہ یتھ ھیوسوامی　لیس سخت بیہ کٹھورشیو چھو آسون
ویسن ہند اتھ ہاسی پوروک وچن　چانی کم اسنہ سیت موڑھ چھی تم بتن

ब्रह्माण्ड बुद्बुद कदम्बक संकुलोऽयं
मायोदधि - विविध दुःख तरङ्ग मालः ।
आश्चर्य मम्ब झटिति प्रलयं प्रयाति
त्वद् ध्यान संतति महा वडवा मुखाग्नौ ॥२७॥

برہمانڈ بُبر کھل بھرت ئی مایا سدُر　دُکھ لہر وسیت بر تھ آسوُن
آشچر چھو ہی موج ناشس چھو واتان　چون دھیان اتھ کہوُت چھو واڑوا اگن

दाक्षायणीति कुटिलेति गुहारणीति -

कात्यायनीति कमलेति कलावतीति ।
एका सती भगवती परमार्थतोऽपि
संदृश्यसे बहुविधा ननु नर्तकीव ॥ १८ ॥

دکھ ہنری ژئ مولا دار داسنی — پرتھ گفای منز چھک ژہ روزانی
تیا ہین ژئ لچھمی ژئ بیر — چھکھ Kalavati تہ ژئ بھگوتی
چھک کو نئی آسیت ہی موج بھوانی — لبنہ چھک ایوان بہہ روپہ پچانی

आनन्द लक्षणमनाहत नाम्नि देशे
नादात्मना परिणतं तव रूपमीशे ।
प्रत्यङ्मुखेन मनसा परिचीयमानं
शंसन्ति नेत्र सलिलैः पुलकैश्च धन्याः ॥ १९

آنند روپی ہرتھ چکرس منز — ناد روپہ ہنی لیس چھ نئی دھیان
ابھیاسہ کن انتر مکھ منہ کن — اشہ سنس کمری دھیان تہ بہاگوان

त्वं चन्द्रिका शशिनि तिग्मरुचौ रुचिस्त्वं
त्वं चेतनासि पुरुषे पवने बलं त्वम् ।
त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनि त्वमूष्मा
निःसारमेव निखिलं त्वदृते यदि स्यात् ॥ २०

ژئ چھک موج بلانی چندرس روشنی — ژئ سریس دتی آسان
ژئ چھک چیتن پورشس آسدان — ژئ پنہ ... سانا
ژئ سواد پانس اگنس ستھ تی — ژئ روس جگت لشہ سار چھو روزان

ज्योतींषि यद्दिवि चरन्ति यदन्तरिक्षं

सूते पयांसि यद्दुहि धरणी च धत्ते ।
यद्वाति वायुरनलो यदुदर्चिरास्ते
तत्सर्वमम्ब! तव केवलमाज्ञयैव ॥२१॥

ہی ماتا سریہ چیندرمہ تارک — آکاشس پیٹھ یم پرکاشس دیوان
شیشہ ناگ لیس گل پرتھوی داران — میگھ یم زُود جگتس ترادوان
والیو فیران اگن چھو زوتان — تم سارئی چانی حکمہ سیت چلان

सङ्कोचमिच्छसि यदा गिरिजे तदानीं
वाक्तर्कयोस्त्वमसि भूमिरनामरूपा ।
यद्वा विकासमुपयाति यदा तदानीं
त्वन्नामरूपगणनाः सुकरी भवन्ति ॥२२॥

سنکوچہ یژھا یلہ چھئے ژہ سیدان — تلہ ژہ موج من تہ بدھ نرو کار بنان
یلہ وکاسس ایوان چھک ژہ ہی گرجی — تلہ چانی نام روپ نن چھ نیران

भोगाय देवि भवतीं कृतिनः प्रणम्य
भ्रूकिंकरीकृतसरोजगृहाः सहस्राः ।
चिन्तामणि-प्रचयकल्पित-केलि शैले
कल्पद्रुमोपवन एव चिरं रमन्ते ॥२३॥

ہی دیوی سُکھ بایت بھاگوان — یلہ ژئی چھئی تم پرنام کران
تلہ چانی بمبہ حرکچ ہمن لچھمی تہ — سا سہ پزہ ایشوری چھی روزان
چنتامنی رتنک سموہ بناوتس — کھیلی ہندس پہاڑس پیٹھ تم کھیلان
کلپہ ورکھہ سیتیو پرمتن باغن — منز تم بیچ کال چھئی فیرانی

हन्तु त्वमेव भवसि त्वदधीनमीशे
संसारतापमखिलं दयया पशूनाम् ।

वैकर्तनी किरण संहतिरेव शक्ता
धर्मं निजं शमयितुं निजयैव वृष्ट्या ॥२४॥

ہی ماج جیوس سمسار دوکھ ساری
دوکھن ہیند ناش ژہ ماتہ ژن چھوآسوٗن
ییتھ پاٹھ سِسر یہ چھوی پننی گرمی

چھہس ژٔی ناش کران دیمارے رکن
دوکھ نورِتی چھیٔ ژٔی آدین
شمراوان پننی دِرشنہ رکن

शक्तिः शरीरमधिदैवत मन्त्रमाला
ज्ञानं क्रिया करणमानस जालमिच्छा ।
ऐश्वर्यमायतनमावरणानि च त्वं
किं तन्न यद्भवसि देवि ! शशाङ्कमौलेः ! ॥२५॥

شریہ چہ آسونی شکھتی ژہ آسونی
جیوآتماد ھیان شکھتی کریا شکھتی
یتھ ماشکھتی الشوری پرِیوار ژٔی
کیانہ چھک ژہ آسوینہ لیٚس سروپ بغوسنکہ

وراٹ سروپ چھک آسونی ژٔی
اندریہ شکھتی آسنہ شاکھتی ژٔی
گرھدین ہنز جاے آسونی ژٔی
سوی سروپ چھک پری پوٗرن ژٔی

भूमौ निवृत्तिरुदिता पयसि प्रतिष्ठा
विद्यानले मरुतिशान्तिरतीत शान्ता
व्योम्नीति याः किलकलाः कलयन्ति विश्वं
तासां विदूरतर मम्ब ! पदं त्वदीयम् ॥२६॥

پرتھوی منز نورتی کلا روٗپ ژٔی
اگنس منز ودیا کلا ژہ آسونیہ
آکاشس یمہ کلاے جگتس داران
تمو کلایو نِشہ دور چھن سروپ

جلس منز پرتِشٹا کلا روٗپ ژٔی
پونس منز شانتی کلا ژٔی
تمو نِشہ دور چھن سروپ آسوٗن
تمہ نِشہ ہورج دور روزان ژٔی

यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं
नाङ्गी करोति हृदयेषु जगच्छरण्ये ।
तावत् विकल्पजटिलाः कुटिलप्रकारा-
स्तर्कग्रहाः समयिनां प्रलयं न यान्ति ॥२७॥

یمت تام نہ یاد جوری چانی رٹن ہردیس
ہی جگت رچھونی تت تانیہ تم شک برتھئ یم بحث کرونی الٹہ وادی
موڑھ بہاوُ تہند ناش کتی سپدی

यद् देवयान पितृयान विहार मेके
कृत्वा मनः करण मंडल सार्वभौमम् ।
याने निवेश्य तव कारण पञ्चकस्य
पर्वाणि पार्वति ! नयन्ति निजासनत्वम् ॥२८॥

یم یوگی پُرش پرانا یانہ یوگ ابھیاس کرکر یلہ پراون
اندر یہ کھل تہ من آسک رینمٹ تم سواری کران یانہ تن کارن

स्थूलासु मूर्तिषु महीप्रमुखासु मूर्तेः
कस्याश्चनापि तव वैभवमम्ब ! यस्याः ।
पत्न्या गिरामपि न शक्यत एव वक्तुं
सासि स्तुता किल मयेति तितिक्षितव्यम् ॥२९॥

پرتھوی تہ پٹھ باباتس تام
کونی مورتی منز ہی موج بوانی
برہما دکن تی چھونہ تتھ ہیو سامرتھ
تمئے وبھوتی ہند گن گرمہ گاین
یمہ تھولہ مورتی موج چھی آسان
چانی ہش وبھوتی چھنہ باسان
گن چانی گیوتھ چھنہ تم تی کینہہ ہرکان
معافی دیتم مہ چھوس بہ آشاوان

कालाग्निकोटिरुचिमम्ब षडध्वशुद्धा-
वाप्लावितेषु भवतीममृतौघवृष्टिम् ।
श्यामां घनस्तनतटां सकलीकृतौ च
ध्यायन्त एव जगतां गुरवो भवन्ति ॥३०॥

کلپانتہ اگنہ پاٹھ گہہ سُس ہی موج
سارۆی بیہ قایم کرنس پٹھ
ریم شامہ روپ سُندر چان دھیان چھی داران

سمسار ناشس پٹھ ژہ چمکان
چھک ژہ تلہ اُمرتک ورشن کران
تم موج جگتک گورُو چھی سپدان

विद्यां परां कतिचिदम्बरमम्ब ! केचि-
दानन्दमेव कतिचित्कतिचिच्च मायाम् ।
त्वां विश्वमाहुरपरे वयमामनाम
साक्षादपारकरुणां गुरुमूर्तिमेव ॥३१॥

کینہہ چھیٔ تہنز ودیا کینہہ چھیٔ آنند
کینہہ جگت مانا ساکھیات حدہ روس

کینہہ چھیٔ مایا روپ ژہ مانان
دیا سروپ گورو روپہ اسی ژہ زانان

कुवलयदलनीलं बर्बर-स्निग्धकेशं
पृथुतरकुचभारा-क्रान्तकान्तावलग्नम् ।
किमिह बहुभिरुक्तै-स्त्वत्स्वरूपं परं नः
सकलभुवनमातः सन्ततं सन्निधत्ताम् ॥३२॥

کُولیہ برگ پاٹھ چھک مَارج ژہ چمکوںی
سُندر کمر سِس سینہ بُون تم اوتھ
زیادہ دنتھی کیا نیری حاصل جگتچ ماجی

دار مُت ژہ ہی موج سُندر کیش
ہی موج آسونی ژہ جگتچ ایشں
سمماکھ مہ روز تم نت دتم تیوتھ سندیش

*** *****

सकलजननीस्तवः। पञ्चमः।

अजानन्तो यान्ति क्षयमवशम्‌न्योन्य कलहै-
र्मी मायाग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः।
जगन्मात जन्म ज्वर भय तमः कौमुदि! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम् ॥१॥

نہ زانہ ون مورکھ پانہ وینہ لڑ لڑ — اوش پاٹھ ناشہ بہاوس چھُی واتان
یمئے منتہ وادی مایائی ہند نئی — گنڈ نئی پھستھ ڈولہ ڈولہ گژھان
ہی جگت ماتا اسی جنمکہ بجُر — بھئے کہ تمہ کوی چُھند رمہ ژہ پاسان
امرت شرن چھی سُنمکھ ہی موج — گلُ گنڈِتھ اسِ ژہ کُن پرنام چھی کران

वचस्तत्कोगम्य स्वरस परमानन्द विभव-
प्रबोधाकाराय द्युति तुलित नीलोत्पल रुचे।
शिवस्याराध्याय स्तनभर विनम्राय सततं
नमो यस्मै कस्मैचन भवतु मुग्धाय महसे ॥२॥

وانی کِن وچارکِن چھک ژہ موج نہ پراونی — چھک ژہ چیتن سروپ پرمہ آنند
نیلی اوھ پلہ پوشہ دنتی آس — ژنی شوبھایمان بیہ گیان تہ آنند
شوس چھک آرادینی جگتس پڑھاوان — گیانہ کمہ یا روپہ تنہ باری رکن
نمسکار آسِنئے تتھ کتھا پنہ تیزس — سارنی موہس اندر اتان ژہ ہی رکن

लुठद्‌ मुक्ताहार स्तनभर नमन्मध्य-लतिका
मुदञ्चद्धर्माम्भः कण गुणित नीलोत्पल रुचम्;
शिवं पार्थ त्राण प्रवण-मृगया कार-गुणितं
शिवा मन्वग् यान्तीं शबर महसं नौमि शबरीम् ॥३॥

ریچہ فل ہار ژہ نالی تنہ بارِی نمتھئی — زاوِل کمر پُس ژہ موج شوبھان
پھٹمتہ گومہ سیت گمہ فرژہ شوبونی — پتلی اوتھ پلہ پوشہ رنگہ چمکان
ارجنس ریچھنے تس شیوس پتہ پتہ — دارمرت تندکاری روپ پُس ژہ آسون
تتھ تندکاری بھائی روپس ہی موج بوانی — گلُ گنڈِتھ ژنی امرت چھوسے شرن

मिथः केशाकेशि प्रधन निधन स्तर्के घटना
बहु श्रद्धा भक्ति प्रणय विषयाश्चाप्त-विषयः।
प्रसीद प्रत्यक्षी भव गिरिसुते! देहि शरणं
निरालम्बं चेतः परिलुठति पारिप्लवमिदम् ॥४॥

بحث کرون چھی مس کڈان اکھ اکس — لڑلڑ تمن پتہ ناش چھو سپدان
ستھاہ پُرش بھکتی کن تہ پریمہ کن — شردھائی کن چانی پوُزا کران
ہی ماج پرکٹ بن اسہ پٹھ پرسن بن — سنتوشٹھ بن اسہ روز بچاوان
اسہ چھی چنچل منہ سس تھیہ روستی — تھیب کراسہ موج ننہ چھی ڈولہ گژھان

शुना वा वह्ने र्वा खग परिषदो वा यदशनं
कदा केन क्वेति क्वचिदपि न कश्चित्कलयति ।
अमुष्मिन्विश्वासं विजहिहि ममाह्वाय वपुषि
अपथ्यार्थ्ये चेतः सकलजननीमेव शरणम् ॥५॥

ہی منہ یتھ شریرس پٹھ نہ اعتبار — چھوی خوراک نی اگنکُ یا ہُنکھی کھیوان
کمہ وقتہ کتھ جایہ کتھ پاٹھ کمہ طریقہ — ییٔی پتھ شریر کر کانہہ نہ زانان
میانی من گژھ شرن جگتچہ ماجہ کنُ — شریرچ ممتا جلد ژہ ترادُ ن

अनाद्यन्ता भेद प्रणयरसिकापि प्रणयिनी
शिवस्यासी यत्त्वं परिणय विधौ देवि गृहिणी ।
सवित्री भूतानामपि यदुदभूः शैल तनया
तदेतत्संसार प्रणयन महा नाटक सुखम् ॥६॥

آدانت روس بیہ بھید روس پریہ پر روپ — آستھ تی چھک شیوسنز پریمہ روپ
وداہ ودھی کن ہی دیوی چھک — تس مہادیوسنز گراھنی روپ
ہی ہمالہ پُتری جیون کران ژہ پیدہ — سمسار لیلا چھی چون جشنہ روپ

ब्रुवन्त्येके तत्त्वं भगवति सदन्ये विदुरसत्
परे मातः! प्राहुस्तव सदसदन्ये नु कवयः ।
परे नैतत्सर्वं समभिदधते देवि सुधिय-
स्तदेतत्त्वन्माया-विलसितमशेषं ननु शिवे! ॥७॥

ہی دیوی کنہہ چھی ونان ژہ تتو روپ — کنہہ چھی ونان ست کنہہ است روپ
کنہہ چھی ونان تہند کھوتہ تہندی موج — کنہہ دانا ونان ست است روپ
کنہہ چھی ونان انز واچ ژہ آسوُن — کنہہ ونان یہ ساروی چھو چون پھولنہ

तडित्कोटि ज्योतिर्द्युति दलित षड्ग्रन्थि गहनं
प्रविष्टं स्वाधारं पुनरपि सुधा वृष्टि वपुषा
किमप्यष्टात्रिंशत्किरणसकलीभूत-मनिशं
भजे धाम श्यामं कुचभरनतं बर्बर कचम् ॥८॥

کرٕوٕہ اُوزملہ سمان چانی ونتی
سوٗ آوار چکرس ببہ توٗرہ نیران
38 کلاروٗپ جگت دِکسا وٕتھ
تتھ شامہ روٗپس ہی موج بوانی

کٹھِنن شَن گنڈن ژٕٹتھ چھک اژان
امرت ورشن سٕرویہ کن وسان
تنہ باری نمنھی کیش ژٕہ چمکان
گری گری روزہ ہا بوسیوا کران

चतुष्पत्रान्तः षड्दल भग पुटान्त स्त्रिवलय-
स्फुरद् विद्युद्वह्नि द्युमणि नियता भद्युतियुते ।
षडश्रं भित्त्वादौ दशदल मृथ द्वादश दलं
कलाश्रं च द्व्यश्रं गतवति नमस्ते गिरिसुते ! ॥१९॥

چوٗرس دلہ کملہ منز نیر تھ شھ دلس
اوزملہ چمک زن ساسہ بدسریہ زلن
شھ دلہ ژٕٹتھ دشہ دلہ پتہ دوادشہ دلی
دو دلہ منزہ درامچہ تس کنڈلنئی

ترکونس منز ساڑھ تری وار سرپا کار
شکھتی کنڈلنی تنتی ژٕہ چمکان
پتہ شوڈشہ دلہ پیٹھ چھی نیران
ہی گرجی چھس تتھ سروپس نمسکار کران

कुलं केचित्प्राहु-र्वपुर् कुल मृन्ये तव बुधाः
परं तत्संभेदं समभिदधते कौल मपरे ।
चतुर्णा मृप्येषा मुपरि किमपि प्राहुरपरे
महामाये ! तत्त्वं तव कथ मृमी निश्चिनुमहे ॥२०॥

کینہہ گیانی ونان چھ ۳۶ تتو روپ
کینہہ ونان چھئی ژٕہ موج شِو شکھتی روپ
کینہہ ونان تھدہ کھوتہ تھد کوستانیہ سروپ

کینہہ گیانی ونان ژٕہ برہمہ شیو روپ
کینہہ ونان امہ کھوتہ تھد چھوچون روپ
ہی مہا مائی کتھ پاٹھ نشچے
بنہ اسہ کوستا چھوچون موج سروپ

षडध्वारण्यानीं प्रलय रविकोटि प्रतिरुचा
रुचा भस्मीकृत्य स्वपद कमल प्रह्व शिरसाम् ।
वितन्वानः शैवं किमपि वपु रिन्दीवर रुचिः
कुचाभ्यामानम्रः शिव पुरुषकारो विजयते ॥२१॥

شہ وتی سٕنٕس جنگل پرلئے کالس پیٹھ
بینن بھکتن یم چانن چرنن
شیو سنز کوستانیہ سروپ ژٕہ دفتی سٕس

کرور دفتی سٕنٕس ژٕہ پرزلان
پیٹھ تھوان مستک چھک تمن رچھان
گیان کریا تنہ باری نمتھ ژٕہ شوبھان

شیو سُند پورٗ شرکار چھک موج ژٕہ آسونیہ   تتھ شکھتی روپس ژی نمسکار کران

प्रियङ्गु श्यामाङ्गी कुरुणातरवासः किसलयां
समुन्मील न्मुक्ता फल बहुल नेपथ्य कुसुमाम् ।
स्तन द्वन्द्व स्फार स्तबक नमितां कल्पलतिकां
सकृद् ध्यायन्त स्त्वां दधति शिव चिन्तामणि पदम् ॥१२॥

ینگہ پوشہ پاٹھ شامہ سُندر شریرس   سرخ وستر پھک ژٕہ دارانی
پھولمتہ مختہ بیہ پوشہ لباسہ سیس   تتہ بار نمتھیٔ ژٕہ شوبھانی
ہی دیٖوی چھک ژٕہ کلپہ تہر آسونیہ   یُس اکہ لٹہ چون دھیان دارانی
سوی شیو روپی چنتامن رتن   چانی دیلیٔ کن چھو پرا وانی

प्रकाशानन्दाभ्या मविदितचरीं मध्य पदवीं
प्रविश्यैतद् द्वन्द्वं रवि शशि समाख्यं कवलयन् ।
प्रविश्योर्ध्वं नादे लय दहन भस्मीकृत कुलः
प्रसादात्ते जन्तुः शिव मकुल मम्ब प्रविशति ॥१३॥

گیان کن کریای کن فیرتھ سوسمنا   اندر اژرت دو شیونی گراس کران
اُردہ ناوس اژرت چِت ویمر شہ اگن کن   سارنی جکرن بھسم چھ کران
تمہ پتہ چانی انوگرہ کن سادھک   اونا شہ شیو پدس پیٹھ چھو واتان

षडाधारावर्तै रपरिमित मन्त्रोर्मि पटलैः-
श्चलन्मुद्रा फेनै र्बहुविध लसद् दैवत झषैः ।
क्रम स्रोतोभि स्त्वं वहसि परनादामृत नदीं
भवानि! प्रत्यग्रा शिव चिद मृताब्धि प्रणयिनी ॥१४॥

6 چکرہ آولنہ نشہ منتر ملکو نشہ   مُدر رائے کفہ نشہ یلہ ژٕہ نیران
کرم روپہ گاڈو نشہ کرمکہ دریاو نشہ   پیرہ ناد امرتہ روپہ یلہ چھک وسان
ہی اموج واتان چھک نوس دریاوس   شیو روپہ چِت سُدرس منتر ژٕہ روزان

महीपाथो वह्नि श्वसन वियदात्मेन्दु रविभि
र्वपुर्भि ग्रस्तांशे रपि तव कियानम्ब! महिमा ।
अमून्यालोकन्ते भगवति न कुत्राप्यणुतरा-

मूवस्थां प्राप्तानि त्वयि तु परम व्योम वपुषि ॥१५॥

پرتھوی جل اگن والیو تہ آکاش
امشو کن بنا ومت چھی ژہ پانئے
چانس پرمہ آکاشکس سروپس

سریہ چندرمہ بیہ جیو آتما
کوتاہ چھو موج بوانی چون ہما
منز چھنہ یم تی کونی وجودس ایوان

मनुष्यास्तिर्यञ्चो मरुत इति लोकत्रयमिदं
भवाम्भोधौ मग्नं त्रिगुण लहरी कोटि लुठितम्।
कटाक्षश्चेदत्र क्वचन तव मातः करुणया
शरीरी सद्योऽयं व्रजति परमानन्द-तनुताम् ॥१६॥

منش چاروائی تہ دیو تریلوکی
کرور یژہ ست رج تمہ لہرن منز
یدوے یمن منز بنہ کینسی چون کٹاکھ
پرمہ آنندکس سروپس سو جلد ی گ

سمسار سُدرس منز چھی پھٹمت
۳ گن ملکن منز ڈولہ چھی گیمت
ہی ماتا سُوزیو ادہ چھو واتان
پرمہ پد دیائے چانی کن چھو پراوان

कलां प्रज्ञामाद्यां समय मनुभूतिं समरसां
गुरुं पारम्पर्यं विनय मुपदेशं शिव कथाम्।
प्रमाणं निर्वाणं परम मतिभूतं परगुहां
विधिं विद्यामाहुः सकल-जननीमेव मुनयः॥१७

ہی جگت ماتا منیشور چھی ژئی ونان
گورہ پرم پراونی ایدیش شو کتھا
رھسہ گیان مریاداتھ بیہ ودیا شکھتی

کریا بدھ آد انوبو سمتا
پرمان نرمان پرتیکھ تہ انمان
جگت ماتا چانی سروپ چھی یم ونان

प्रलीने शब्दौघे तदनुविरते बिन्दु विभवे
ततस्तत्त्वे चाष्टु ध्वनिभिरनुपाधिन्युपरते।
श्रिते शाक्ते पर्वण्यनु कलितं चिन्मात्रगहनां
स्वसंवित्ति योगी रसायति शिवाख्यां परतनुम् ॥१८॥

شبد سُموہ روکاو تھ پتہ بندہ وبھو گالتھ
تتوس پتھ آتم سروپس اوپادھی رستس
شاکھتی مارگک آشریہ چھی یم رٹان
سابھاوک شو سروپس تم پراوان

لشٹھ گیان چت آکاشس منز لین کرتھ
نادہ رویہ یرہ امرتس منز روکاوتھ
چیتن ماترک رھسہ تم ومرشس کران
تھدِس شو سروپس تم سواد کران

परानन्दाकारां निरवधि शिवैश्वर्य वपुषं.

निराकार ज्ञान प्रकृति मुनवच्छिन्न करुणाम् ।
सावित्रीं लोकानां निरतिशय धामास्पद पदां
भवो वा मोक्षो वा भवतु भवतीमेव भजताम् ॥१९॥

حدہ روس پرمہ آنند روپہ چون دھیان
نروکار گیانہ روس حدہ روس دیاروپہ
نتس برابری چھئے موکھ یا سمسار
شیو ایشوری روپہ یس مانان
جیوپیدہ کرمدُن یس ژہ مانان
تس کونی روپہ چانی سیوا کران

जगत्कार्ये कृत्वा तमपि हृदये तच्च पुरुषे
पुमांसं बिन्दुस्थं तमपि परनादाख्य गहने ।
तदेतज्ज्ञानाख्ये तदपि परमानन्द विभवे
महा व्योमाकारे त्वदनुभवशीलो विजयते ॥२०॥

جگتس کایا یس منز چھک ہردیہ ژہ آسوینہ
آتمہ پرشس منز بندو ٹھیکت
نادس منز گیان روپ چون آسون
ہی جگت ماتا جنے کار تمنئی
ہر دیس منز چھک آتمہ دیو روپ
بندس منز چھک پرمہ ناد روپ
گیانس منز پرمانند وبھو روپ
یم کرن چون انو بو مہاکاشہ روپ

विधे विद्ये वेद्ये विविध समये वेद जननि
विचित्रे विश्वाद्ये विनयसुलभे वेद गुलिके ।
शिवाज्ञे शीलस्थे शिवपदवदन्ये शिवनिधे
शिवे मातर्मह्यं त्वयि वितर भक्तिं निरुपमाम् ॥२१॥

ہی کریا شکھتی گیان شکھتی وودھ
ہی وچتر روپی چھک ژہ جگتچ آد
شیو اگنیائے منز ژہی سبھاو روپی
شکھ کوی خزانہ چھک آسونیہ ژہ ہی گنج
سدا نشتہ آچار روپ ہی وید ماتا
ونئے سن ژہ پراونی ژہ ویدچ سار
شیو پد دیوان ژی ہی ماتا
بے حد بھکتی دیتہ مے ہی ماتا

विधे मुण्डं हृत्वा यदकुरुत पात्रं करतले
हरिं शूलप्रोतं यदगमयदंसाऽऽभरणताम् ।
अलंचक्रे कण्ठं यदपि गरलेनाम्ब! गिरिशः
शिवस्थायाः शक्ते स्तदिदऽमखिलं ते विलसितम् ॥२२॥

برہما سُند کلہ الگ کرتھ تتھ کلس   پننے اتھک پاتر بناوتھ
پننے فیکی کوٗی بناوٗن زیور   نارایَن تہ شوٗلس پتھ اوٗرتھ
سخت کھوتہ سختی زہر کن تھ شوٗن   ھوٗتہ لیُس پننوی شوبھراون
شوس پتھ ٹھیکیچھ امی شکھتی ہُند   ئی مُسوروی چوٗنیٗ والاس چھوٗ آسوٗن

विरिञ्च्याख्या मातः! सृजसि हरिसंज्ञा त्वमवसि
त्रिलोकीं रुद्राख्या हरसि विदधासीश्वर दशाम्।
भवन्ती सादाख्या शिवयसि च पाशौघदलिनी
त्वमेवैका,ऽनेका भवसि कृत भेदे गिरिसुते ॥२३॥

برہما ناوہ کن کران پیدہ ترِلوکی   نارایَنہ ناوہ کن چھک ژہ تتھ رچھان
رودرہ ناوہ کن ژیٗ چھک کران سمہار   ایشر دشا چھک ژی داوان
سداشیو ناوہ کن جگتس دیوان سکھ   پاشن ہند سموہ ژی گالان
ہی ہمالہ پتری جئ کونی آستھ   بیوٗن بیوٗن کامیو کن اییک ژہ باسان

मुनीनां चेतोभिः प्रमृदित कषायै रपि मनाक्
अशक्ये संस्प्रष्टुं चकित चकितै रम्ब सततम्।
श्रुतीनां मूर्धानः प्रकृति कठिनाः कोमलतरे
कथं ते विन्दन्ते पद किसलये पार्वति! पदम् ॥२४॥

ہی ماتا یم منیشور چھی منہ کیوٗ   گلمیتو دوٗشو سیتس آسوٗنی
تم تی خوٗچ خوٗچ موٗج چانن پادن   سپرش کرنس پتھ چھی نہ ھیکون
اوپنشدھ سُبھاو کن کٹھن پاٹھی تم   چانن چرن کملن ہنزہ جائے پراون

तडिद्वल्लीं नित्या मृत सरितं पार राहितां
मलोत्तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृति,मगुणग्रन्थि गहनाम्।
गिरां दूरां विद्या मविनत कुचां विश्व जननी-
मपर्यन्तां लक्ष्मी,मभिदधति सन्तो भगवतीम् ॥२५॥

اوٗزملہ روپ اپار امرت ندی روپ   نرملہ چندرمہ ترگُن روپ
وانی نشہ دور ژی تھنر ودیا مروپ   گیان کریا تو نمتھ جگت ماتا روپ
چھیٔ ونان ستازن ہی دیوی چانی   یم روپ تہ بیہ اننتہ لچھمی روپ

शरीरं क्षित्यम्भः प्रभृति रचितं केवल मिदं -

सुखं दुःखं चायं कलयति पुमांश्चेतन इति ।
स्फुटं ज्ञानानोऽपि प्रभवति न देहो रहयितुं
शरीराऽहंकारं तव समय बाह्यो गिरिसुते ! ॥२६॥

پرتھوی جل اگن والو تہ آکاش
سُکھ دُکھ ایم زانان پورُش چیتن
ہی ہمالہ پُتری شریرُک اہنکار

چھوی یمن پانچہ ونن شریر بنان
نمود پاٹھ جیو مُوک انو بہ کران
چھونہ جیو چانی انوگرہ وُس تراوان

पिता माता भ्राता सुहृदनुचरः सद्म गृहिणी
वपुः पुत्रो मित्रं धनमपि यदा मां विजहति ।
तदा मे भिन्दाना सपदि भय मोहान्धतमसं
महाज्योत्स्ने! मातर्भव करुणया सन्निधिकरी ॥२७॥

مُول ماجی بھائی بند نوکر تہ گرہنی
یمی وقتہ تراونم تمی وقتہ کھئے موہ
مہا پرکاشہ روپ بنتھ دیاے کن ماجی

شریر پُتر مِتر گھرہ بیہ دھن
اندکارس چلد جلد چوٹنی ین
نزدیک ٹھہرت سُنمکھ مہ ین

सुता दक्षस्यादौ किल सकल मातस्त्वमुदभूः
स दोषं तं हित्वा तदनु गिरिराजस्य तनया ।
अनाद्यन्ता शम्भोरपृथगपि शक्तिर्भगवती
विवाहाज्जायासीत्यहह चरितं वेत्ति तव कः ॥२८॥

ہی جگت ماتا گوڈہ ینتھ آسکھ
دوشہ کن چھنتن سوئی ژی تراوتھ
آد انتہ رستس لس فینوس نشہ چھکنہ
دواہ روکسہ وردارتھن ژہ شنکر

دِکھی پرجاپتہ منز ژی کماری
پتہ نیکھ ژی ہمالہ پتری
زاہ تہ یوتہ ہی شکتی بھگوتی
تم چانی پرتر کوس زانہی

कणास्त्वद्दीप्तीनां रवि शशि कृशानु प्रभृतयः
परंब्रह्म क्षुद्रं तव नियतमानन्द कणिका ।
शिवादि क्षित्यन्तं त्रिवलय तनोः सर्वमुदरे
तवास्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भगवति ॥२९॥

ہی دیوی سریہ چندرمہ بیہ اگن
پرم برہم چھوی چانی نتہ اندکنہ

چانی دفتی ہنز چھی اکھ تمبرا
آسون چھوی اکھ لوکت نکشہ بشہ

شوتانھ سندی پتھ پرتھوی تولس تانیہ — سارنی ژہ کنڈلنی روپہ روزان
آشچر چھو ماج چون بھکتن چھک چھنئی — ہر دیس منتر پرکٹ پاٹھ چمکان

त्वया यो जानीते रचयति भवत्यैव सततं
त्वयैवेच्छस्यम्ब त्वमसि निखिला यस्य तनवः ।
गता साम्यं शम्भु र्वहति परमं व्योम भवती
तथाप्येवं हित्वा विहरति शिवस्येति किमिदम् ॥३०॥

چانی کن زانان چانی کن یچھان سوی — چانی کن سوشیو جگت چھوی بناوان
ژی چھک تس سروپ سے چانی کن چھوی — سوی سوامہ بہادس پتھ واتان
یلہ تراوان ژہ موج تلہ چانس پرمہ — آکاشس منز لین سپدان

पुरः पश्चादन्ते बहि रुपरि वेद्यं परिमितं
परं स्थूलं सूक्ष्मं सकलमकुलं गुह्य मगुह्यम् ।
दवीयो नेदीयः सदसदिति विश्वं भगवतीं
सदा पश्यन्त्याज्ञा वहसि भुवन क्षोभ जननीम् ॥३१॥

برونٹھ پتہ اندرہ نبرہ لوک بڈ موٹہ سکھم — شیو روپ شکھی روپ گفتہ نود روپ
دور نزدیک ست است روپ پیش جگت — تتھ سرشٹی تھت سمہار چھے کرونی
جگتچ آگنیا کار ژہ زاننہ ایوان

मयूखाः पूष्णीव ज्वलन इव तद्दीप्ति कणिकाः
पयोधौ कल्लोल प्रतिहित महिम्नीव पृषतः ।
उदेत्योदेत्याऽम्ब त्वयि सह निजै स्सात्त्विक कुलैः -
भजन्ते तत्त्वौघाः प्रशम मनु कल्पं परवशाः ॥३२॥

سریہ سند کرن زن اگنیچہ تمبری زن — سمندرن ملکن ہنزہ پانیہ چھکہ زن
تتھے پاٹھ شو پتھ پرتھوی تولس تانیہ — پرتھ کلپانتس اوتھ اوتھ لنے سپدان

विधु र्विष्णु र्ब्रह्मा प्रकृति रणु रात्मा दिनकरः
स्वभावो जैनेन्द्र स्सुगत मुनि राकाश मनिलः ।
शिवः शक्तिश्चेति श्रुति विषयतां तामुपगतां
विकल्पै रेभि स्त्वामऽभि दधति सन्तो भगवतीम् ॥३३॥

چندرمہ ویشنو برہما بیہ سریہ — مایا سبھاو ست جیو تہ آتما
آکاش والو شو شکتی یم ناو — بھیدکن ویدکی پتھ یم واتان
ست جن بمو نا ووکن بن بن — ہی موج بوانی جی چھی سموان

प्रविश्य स्वं मार्गं सहज दयया देशिक दृशा
षडध्व ध्वान्तौघ च्छिदुर गणनातीत करुणाम् ।

परानन्दाकारां समादि शिवयन्तो मपि तनुं
स्वमात्मानं धन्याश्चिर मुपलभन्ते भगवतीम् ॥३४॥

قدرتی دیاے کن گورو سنزی نظری کن   یم شکھتی مارگس منز پردیشں کران
تمی رشہ اوتی سُس سمارہ اند کار   دیاے کن موج چھکھ تِہ گالان
پرمانند کوی سُکھ دیوان تِہ تمی   تمہے بھاگوان موج چھکھ تِہ پراوان

शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमसि समया त्वं समयिनी
त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमयमणिमादि गुण गुणाः ।
अविद्या त्वं विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमपरं
पृथक् तत्त्वं त्वत्तो भगवति न वीक्षामह इमे ॥३५॥

ژی چھکھ شوتے ژی چھکھ شکھتی   ژی سمئے تتھ زانہ وینہ چھکھ ژے
ژی آتما چھکھ اپدیشں چھکھ ژی   ژی انما دکھ اشٹہ سدھی ژے
ژی اودیا ودیا جگتک پیدا رتھ   ژہ نشہ کانہہ چھنہ بیون اسی زانان

असंख्यैः प्राचीनैर्जननि जननैः कर्मनिलया-
न्नते जन्मन्यन्ते गुरुवपुषमासाद्य गिरिशम् ।
अवाप्याज्ञां शैवीं क्रमतनुरपि त्वां विदितवान्
नयेयं त्वत्पूजा स्तुति विरचनेनैव दिवसान् ॥३६॥

ہی ماتا اسنکھ پراتن جنمن اندر   کرم گلنہ کن اونیہ جنم پراوتھ
گورو شو سروپ لبتھ شکھتی سروپ پراوتھ   وارہ پاٹھ موج چون سروپ زانتھ
چھاتی توتا تہ پوجا کرون بہ روزے   تتھ سیت ژھنہ بو دن دن کٹاوتھ

यत् षट्पत्रं कमल मुदितं तस्य या कर्णिकाख्या
योनि स्तस्याः प्रथित मुदरे यत्तदोंकार पीठम् ।
तस्मिन्नन्तः कुचभरनतां कुण्डलीतः प्रवृत्तां
श्यामाकारां सकल जननीं सन्ततं भावयामि ॥३७॥

سو ادھشٹان چکرس منز شٹھ دل   پمپوش لیس چھوی موج آسون
تت منز آسون لیس چھو بیجوک کوشں   بیجہ کوشس پیٹھ اومکار چھ جاے
اومکار چھ جائے پیٹھ واس کروتی   یُوسہ کنڈلنی چھکھ تسی ژہ روزان
تس شامہ سُندر مورتی دارونی   جگت ماتاے ژہی نت یہ سمران

भुवि पयसि कृशानौ मारुते खे शशाङ्के
सवितरि यजमाने प्यष्टधा शक्तिरेका ।
वहति कुचभराभ्यां या विनम्रापि विश्वं
सकल जननि सा त्वं पाहि मामित्युवश्यम् ॥३८॥

پرتھوی جل اگن وایو آکاشں   سریہ چندرمہ یجمن یمن آٹھن
چھک کوی شکھتی گیان کریا روپ   تنہ پالی تمتھی جگت چھ داران
سوی چھک سادی جگچ ژی ماتا   اوشن پاٹھ گوچھ ژہ کرسون پالن

समाप्ता

